

॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥

समन्यमानस्वाचार्योममायंफाल्गुनोयथा ॥ भीमः करिष्यते पूजामित्युवाच वक्रोदरं ॥ ४४ ॥ भीमसेननतेशक्याप्रवेष्टुमरिवाहिनी ॥ मामनिर्जित्यसमरेशत्रु
मधमहाबल ॥ ४५ ॥ यदिते सो नुजः कृष्णः प्रविष्टो नु मते मम ॥ अनीकं न तु शक्यं मे प्रवेष्टुमिह वै त्वया ॥ ४६ ॥ अथ भीमस्तु तच्छ्रुत्वा गुरोर्वाक्यमपेतभीः ॥ क्रुद्धः
प्रोवाच वै द्रोणं रक्तघ्ने क्षणस्वरन् ॥ ४७ ॥ तवार्जुनो नानुमते ब्रह्मबंधारणाजिरं ॥ प्रविष्टः सहिदुर्धर्षः शकस्यापि विशेद्वलं ॥ ४८ ॥ तेन वै परमां पूजां कुर्वता मा
नि तो द्यसि ॥ नार्जुनो हं घृणी द्रोण भीमसेनो स्मिते रिपुः ॥ ४९ ॥ पितानस्त्वं गुरुर्बधुस्तथा पुत्रास्तु ते वयं ॥ इति मन्यामहे सर्वं भवंतं प्रणताः स्थिताः ॥ ५० ॥ अद्यत
द्विपरीतं ते वदतोस्मा सुदृश्यते ॥ यदि त्वं शत्रुमात्मानं मन्यसे तत्तथा स्त्विह ॥ ५१ ॥ एष ते सदृशं शत्रोः कर्म भीमः करोम्यहं ॥ अथोद्भाम्यगदां भीमः कालदंढमिवा
तकः ॥ ५२ ॥ द्रोणाय व्यसृजद्राजन्सरथादवपुषुवे ॥ साश्वसूतध्वजं यानं द्रोणस्यापोथय तदा ॥ ५३ ॥ प्राष्टद्राच्च बहून्यो धान्वायुर्वक्षानिवौजसा ॥ तं पुनः परि
वव्रुस्ते तव पुत्रा रथोत्तमं ॥ ५४ ॥ अन्यं तु रथमास्थाय द्रोणः प्रहरतां वरः ॥ व्यूहद्वारं समासाद्य युद्धाय समुपस्थितः ॥ ५५ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज भीमसेनः पराक्रमी ॥
अग्रतः स्यंदनानीकं शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ५६ ॥ ते वध्यमानाः समरे तव पुत्रा महारथाः ॥ भीमं भीमबलायुद्धे योधयंति जयैषिणः ॥ ५७ ॥ ततो दुःशासनः क्रुद्धो
रथशक्तिं समाक्षिपत् ॥ सर्वपारशवीतीक्ष्णां जिघांसुः पांडुनंदनं ॥ ५८ ॥ आपतंतीं महाशक्तिं तव पुत्रप्रणोदितां ॥ द्विधा चिच्छेदतां भीमस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥
॥ ५९ ॥ अथान्यैर्विशिखैस्तीक्ष्णैः संक्रुद्धः कुंडभेदिनं ॥ सुर्षणं दीर्घनेत्रं च त्रिभिखीनवधीद्वली ॥ ६० ॥ ततो वंदारकं वीरं कुरूणां कीर्तिवर्धनं ॥ पुत्राणां तव वीरा
णां युध्यतामवधीपुनः ॥ ६१ ॥ अभयं रौद्रकर्मणं दुर्विमोचनमेव च ॥ त्रिभिखीनवधीद्वीमः पुनरेव सुतांस्तव ॥ ६२ ॥ वध्यमाना महाराज पुत्रास्तव बली
यसा ॥ भीमं प्रहरतां श्रेष्ठं समंतात्स्यवारयन् ॥ ६३ ॥ तेशैरभीमकर्मणं ववर्षुः पांडवं युधि ॥ मेघा इवातपापाये धाराभिर्धरणीधरं ॥ ६४ ॥ सतद्वाणमयं वर्षम
श्मवर्षमिवाचलः ॥ प्रतीच्छन् पांडुदायादो न प्राव्यथ तश्नुहा ॥ ६५ ॥ विदानुविदो सहितौ सुवर्माणं च ते सुतं ॥ प्रहसन्नेव कौंतेयः शरैर्निन्येयमक्षयं ॥ ६६ ॥
ततः सुदर्शनं वीरं पुत्रं ते भरतर्षभ ॥ विव्याध समरे तूर्णं सपपातममारच ॥ ६७ ॥ सोचिरेणैव कालेन तद्रथानीकमाशुगैः ॥ दिशः सर्वाः समालोक्य व्यथमत्पांडु
नंदनः ॥ ६८ ॥ ततो वै रथघोषेण गर्जितेन मृगा इव ॥ भज्यमानाश्च समरे तव पुत्रा विशांपते ॥ ६९ ॥

॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥

॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥

॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥

॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥

॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

॥ २०१ ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ २०९ ॥ २१० ॥ २११ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥ २१६ ॥ २१७ ॥ २१८ ॥ २१९ ॥ २२० ॥

॥ २२१ ॥ २२२ ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ २२५ ॥ २२६ ॥ २२७ ॥ २२८ ॥ २२९ ॥ २३० ॥ २३१ ॥ २३२ ॥ २३३ ॥ २३४ ॥ २३५ ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥

॥ २४१ ॥ २४२ ॥ २४३ ॥ २४४ ॥ २४५ ॥ २४६ ॥ २४७ ॥ २४८ ॥ २४९ ॥ २५० ॥ २५१ ॥ २५२ ॥ २५३ ॥ २५४ ॥ २५५ ॥ २५६ ॥ २५७ ॥ २५८ ॥ २५९ ॥ २६० ॥

॥ २६१ ॥ २६२ ॥ २६३ ॥ २६४ ॥ २६५ ॥ २६६ ॥ २६७ ॥ २६८ ॥ २६९ ॥ २७० ॥ २७१ ॥ २७२ ॥ २७३ ॥ २७४ ॥ २७५ ॥ २७६ ॥ २७७ ॥ २७८ ॥ २७९ ॥ २८० ॥

॥ २८१ ॥ २८२ ॥ २८३ ॥ २८४ ॥ २८५ ॥ २८६ ॥ २८७ ॥ २८८ ॥ २८९ ॥ २९० ॥ २९१ ॥ २९२ ॥ २९३ ॥ २९४ ॥ २९५ ॥ २९६ ॥ २९७ ॥ २९८ ॥ २९९ ॥ ३०० ॥

॥ ३०१ ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥ ३०४ ॥ ३०५ ॥ ३०६ ॥ ३०७ ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥ ३१० ॥ ३११ ॥ ३१२ ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥ ३१५ ॥ ३१६ ॥ ३१७ ॥ ३१८ ॥ ३१९ ॥ ३२० ॥

॥ ३२१ ॥ ३२२ ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥ ३२७ ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥ ३३१ ॥ ३३२ ॥ ३३३ ॥ ३३४ ॥ ३३५ ॥ ३३६ ॥ ३३७ ॥ ३३८ ॥ ३३९ ॥ ३४० ॥

॥ ३४१ ॥ ३४२ ॥ ३४३ ॥ ३४४ ॥ ३४५ ॥ ३४६ ॥ ३४७ ॥ ३४८ ॥ ३४९ ॥ ३५० ॥ ३५१ ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥ ३५६ ॥ ३५७ ॥ ३५८ ॥ ३५९ ॥ ३६० ॥

॥ ३६१ ॥ ३६२ ॥ ३६३ ॥ ३६४ ॥ ३६५ ॥ ३६६ ॥ ३६७ ॥ ३६८ ॥ ३६९ ॥ ३७० ॥ ३७१ ॥ ३७२ ॥ ३७३ ॥ ३७४ ॥ ३७५ ॥ ३७६ ॥ ३७७ ॥ ३७८ ॥ ३७९ ॥ ३८० ॥

॥ ३८१ ॥ ३८२ ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ ३८५ ॥ ३८६ ॥ ३८७ ॥ ३८८ ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥ ३९१ ॥ ३९२ ॥ ३९३ ॥ ३९४ ॥ ३९५ ॥ ३९६ ॥ ३९७ ॥ ३९८ ॥ ३९९ ॥ ४०० ॥

॥ ४०१ ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥ ४०८ ॥ ४०९ ॥ ४१० ॥ ४११ ॥ ४१२ ॥ ४१३ ॥ ४१४ ॥ ४१५ ॥ ४१६ ॥ ४१७ ॥ ४१८ ॥ ४१९ ॥ ४२० ॥

॥ ४२१ ॥ ४२२ ॥ ४२३ ॥ ४२४ ॥ ४२५ ॥ ४२६ ॥ ४२७ ॥ ४२८ ॥ ४२९ ॥ ४३० ॥ ४३१ ॥ ४३२ ॥ ४३३ ॥ ४३४ ॥ ४३५ ॥ ४३६ ॥ ४३७ ॥ ४३८ ॥ ४३९ ॥ ४४० ॥

॥ ४४१ ॥ ४४२ ॥ ४४३ ॥ ४४४ ॥ ४४५ ॥ ४४६ ॥ ४४७ ॥ ४४८ ॥ ४४९ ॥ ४५० ॥ ४५१ ॥ ४५२ ॥ ४५३ ॥ ४५४ ॥ ४५५ ॥ ४५६ ॥ ४५७ ॥ ४५८ ॥ ४५९ ॥ ४६० ॥

॥ ४६१ ॥ ४६२ ॥ ४६३ ॥ ४६४ ॥ ४६५ ॥ ४६६ ॥ ४६७ ॥ ४६८ ॥ ४६९ ॥ ४७० ॥ ४७१ ॥ ४७२ ॥ ४७३ ॥ ४७४ ॥ ४७५ ॥ ४७६ ॥ ४७७ ॥ ४७८ ॥ ४७९ ॥ ४८० ॥

॥ ४८१ ॥ ४८२ ॥ ४८३ ॥ ४८४ ॥ ४८५ ॥ ४८६ ॥ ४८७ ॥ ४८८ ॥ ४८९ ॥ ४९० ॥ ४९१ ॥ ४९२ ॥ ४९३ ॥ ४९४ ॥ ४९५ ॥ ४९६ ॥ ४९७ ॥ ४९८ ॥ ४९९ ॥ ५०० ॥

॥ ५०१ ॥ ५०२ ॥ ५०३ ॥ ५०४ ॥ ५०५ ॥ ५०६ ॥ ५०७ ॥ ५०८ ॥ ५०९ ॥ ५१० ॥ ५११ ॥ ५१२ ॥ ५१३ ॥ ५१४ ॥ ५१५ ॥ ५१६ ॥ ५१७ ॥ ५१८ ॥ ५१९ ॥ ५२० ॥

॥ ५२१ ॥ ५२२ ॥ ५२३ ॥ ५२४ ॥ ५२५ ॥ ५२६ ॥ ५२७ ॥ ५२८ ॥ ५२९ ॥ ५३० ॥ ५३१ ॥ ५३२ ॥ ५३३ ॥ ५३४ ॥ ५३५ ॥ ५३६ ॥ ५३७ ॥ ५३८ ॥ ५३९ ॥ ५४० ॥

॥ ५४१ ॥ ५४२ ॥ ५४३ ॥ ५४४ ॥ ५४५ ॥ ५४६ ॥ ५४७ ॥ ५४८ ॥ ५४९ ॥ ५५० ॥ ५५१ ॥ ५५२ ॥ ५५३ ॥ ५५४ ॥ ५५५ ॥ ५५६ ॥ ५५७ ॥ ५५८ ॥ ५५९ ॥ ५६० ॥

॥ ५६१ ॥ ५६२ ॥ ५६३ ॥ ५६४ ॥ ५६५ ॥ ५६६ ॥ ५६७ ॥ ५६८ ॥ ५६९ ॥ ५७० ॥ ५७१ ॥ ५७२ ॥ ५७३ ॥ ५७४ ॥ ५७५ ॥ ५७६ ॥ ५७७ ॥ ५७८ ॥ ५७९ ॥ ५८० ॥

॥ ५८१ ॥ ५८२ ॥ ५८३ ॥ ५८४ ॥ ५८५ ॥ ५८६ ॥ ५८७ ॥ ५८८ ॥ ५८९ ॥ ५९० ॥ ५९१ ॥ ५९२ ॥ ५९३ ॥ ५९४ ॥ ५९५ ॥ ५९६ ॥ ५९७ ॥ ५९८ ॥ ५९९ ॥ ६०० ॥

॥ ६०१ ॥ ६०२ ॥ ६०३ ॥ ६०४ ॥ ६०५ ॥ ६०६ ॥ ६०७ ॥ ६०८ ॥ ६०९ ॥ ६१० ॥ ६११ ॥ ६१२ ॥ ६१३ ॥ ६१४ ॥ ६१५ ॥ ६१६ ॥ ६१७ ॥ ६१८ ॥ ६१९ ॥ ६२० ॥

॥ ६२१ ॥ ६२२ ॥ ६२३ ॥ ६२४ ॥ ६२५ ॥ ६२६ ॥ ६२७ ॥ ६२८ ॥ ६२९ ॥ ६३० ॥ ६३१ ॥ ६३२ ॥ ६३३ ॥ ६३४ ॥ ६३५ ॥ ६३६ ॥ ६३७ ॥ ६३८ ॥ ६३९ ॥ ६४० ॥

॥ ६४१ ॥ ६४२ ॥ ६४३ ॥ ६४४ ॥ ६४५ ॥ ६४६ ॥ ६४७ ॥ ६४८ ॥ ६४९ ॥ ६५० ॥ ६५१ ॥ ६५२ ॥ ६५३ ॥ ६५४ ॥ ६५५ ॥ ६५६ ॥ ६५७ ॥ ६५८ ॥ ६५९ ॥ ६६० ॥

॥ ६६१ ॥ ६६२ ॥ ६६३ ॥ ६६४ ॥ ६६५ ॥ ६६६ ॥ ६६७ ॥ ६६८ ॥ ६६९ ॥ ६७० ॥ ६७१ ॥ ६७२ ॥ ६७३ ॥ ६७४ ॥ ६७५ ॥ ६७६ ॥ ६७७ ॥ ६७८ ॥ ६७९ ॥ ६८० ॥

॥ ६८१ ॥ ६८२ ॥ ६८३ ॥ ६८४ ॥ ६८५ ॥ ६८६ ॥ ६८७ ॥ ६८८ ॥ ६८९ ॥ ६९० ॥ ६९१ ॥ ६९२ ॥ ६९३ ॥ ६९४ ॥ ६९५ ॥ ६९६ ॥ ६९७ ॥ ६९८ ॥ ६९९ ॥ ७०० ॥

॥ ७०१ ॥ ७०२ ॥ ७०३ ॥ ७०४ ॥ ७०५ ॥ ७०६ ॥ ७०७ ॥ ७०८ ॥ ७०९ ॥ ७१० ॥ ७११ ॥ ७१२ ॥ ७१३ ॥ ७१४ ॥ ७१५ ॥ ७१६ ॥ ७१७ ॥ ७१८ ॥ ७१९ ॥ ७२० ॥

॥ ७२१ ॥ ७२२ ॥ ७२३ ॥ ७२४ ॥ ७२५ ॥ ७२६ ॥ ७२७ ॥ ७२८ ॥ ७२९ ॥ ७३० ॥ ७३१ ॥ ७३२ ॥ ७३३ ॥ ७३४ ॥ ७३५ ॥ ७३६ ॥ ७३७ ॥ ७३८ ॥ ७३९ ॥ ७४० ॥

॥ ७४१ ॥ ७४२ ॥ ७४३ ॥ ७४४ ॥ ७४५ ॥ ७४६ ॥ ७४७ ॥ ७४८ ॥ ७४९ ॥ ७५० ॥ ७५१ ॥ ७५२ ॥ ७५३ ॥ ७५४ ॥ ७५५ ॥ ७५६ ॥ ७५७ ॥ ७५८ ॥ ७५९ ॥ ७६० ॥

॥ ७६१ ॥ ७६२ ॥ ७६३ ॥ ७६४ ॥ ७६५ ॥ ७६६ ॥ ७६७ ॥ ७६८ ॥ ७६९ ॥ ७७० ॥ ७७१ ॥ ७७२ ॥ ७७३ ॥ ७७४ ॥ ७७५ ॥ ७७६ ॥ ७७७ ॥ ७७८ ॥ ७७९ ॥ ७८० ॥

॥ ७८१ ॥ ७८२ ॥ ७८३ ॥ ७८४ ॥ ७८५ ॥ ७८६ ॥ ७८७ ॥ ७८८ ॥ ७८९ ॥ ७९० ॥ ७९१ ॥ ७९२ ॥ ७९३ ॥ ७९४ ॥ ७९५ ॥ ७९६ ॥ ७९७ ॥ ७९८ ॥ ७९९ ॥ ८०० ॥

॥ ८०१ ॥ ८०२ ॥ ८०३ ॥ ८०४ ॥ ८०५ ॥ ८०६ ॥ ८०७ ॥ ८०८ ॥ ८०९ ॥ ८१० ॥ ८११ ॥ ८१२ ॥ ८१३ ॥ ८१४ ॥ ८१५ ॥ ८१६ ॥ ८१७ ॥ ८१८ ॥ ८१९ ॥ ८२० ॥

॥ ८२१ ॥ ८२२ ॥ ८२३ ॥ ८२४ ॥ ८२५ ॥ ८२६ ॥ ८२७ ॥ ८२८ ॥ ८२९ ॥ ८३० ॥ ८३१ ॥ ८३२ ॥ ८३३ ॥ ८३४ ॥ ८३५ ॥ ८३६ ॥ ८३७ ॥ ८३८ ॥ ८३९ ॥ ८४० ॥

॥ ८४१ ॥ ८४२ ॥ ८४३ ॥ ८४४ ॥ ८४५ ॥ ८४६ ॥ ८४७ ॥ ८४८ ॥ ८४९ ॥ ८५० ॥ ८५१ ॥ ८५२ ॥ ८५३ ॥ ८५४ ॥ ८५५ ॥ ८५६ ॥ ८५७ ॥ ८५८ ॥ ८५९ ॥ ८६० ॥

॥ ८६१ ॥ ८६२ ॥ ८६३ ॥ ८६४ ॥ ८६५ ॥ ८६६ ॥ ८६७ ॥ ८६८ ॥ ८६९ ॥ ८७० ॥ ८७१ ॥ ८७२ ॥ ८७३ ॥ ८७४ ॥ ८७५ ॥ ८७६ ॥ ८७७ ॥ ८७८ ॥ ८७९ ॥ ८८० ॥

॥ ८८१ ॥ ८८२ ॥ ८८३ ॥ ८८४ ॥ ८८५ ॥ ८८६ ॥ ८८७ ॥ ८८८ ॥ ८८९ ॥ ८९० ॥ ८९१ ॥ ८९२ ॥ ८९३ ॥ ८९४ ॥ ८९५ ॥ ८९६ ॥ ८९७ ॥ ८९८ ॥ ८९९ ॥ ९०० ॥

॥ ९०१ ॥ ९०२ ॥ ९०३ ॥ ९०४ ॥ ९०५ ॥ ९०६ ॥ ९०७ ॥ ९०८ ॥ ९०९ ॥ ९१० ॥ ९११ ॥ ९१२ ॥ ९१३ ॥ ९१४ ॥ ९१५ ॥ ९१६ ॥ ९१७ ॥ ९१८ ॥ ९१९ ॥ ९२० ॥

॥ ९२१ ॥ ९२२ ॥ ९२३ ॥ ९२४ ॥ ९२५ ॥ ९२६ ॥ ९२७ ॥ ९२८ ॥ ९२९ ॥ ९३० ॥ ९३१ ॥ ९३२ ॥ ९३३ ॥ ९३४ ॥ ९३५ ॥ ९३६ ॥ ९३७ ॥ ९३८ ॥ ९३९ ॥ ९४० ॥

॥ ९४१ ॥ ९४२ ॥ ९४३ ॥ ९४४ ॥ ९४५ ॥ ९४६ ॥ ९४७ ॥ ९४८ ॥ ९४९ ॥ ९५० ॥ ९५१ ॥ ९५२ ॥ ९५३ ॥ ९५४ ॥ ९५५ ॥ ९५६ ॥ ९५७ ॥ ९५८ ॥ ९५९ ॥ ९६० ॥

॥ ९६१ ॥ ९६२ ॥ ९६३ ॥ ९६४ ॥ ९६५ ॥ ९६६ ॥ ९६७ ॥ ९६८ ॥ ९६९ ॥ ९७० ॥ ९७१ ॥ ९७२ ॥ ९७३ ॥ ९७४ ॥ ९७५ ॥ ९७६ ॥ ९७७ ॥ ९७८ ॥ ९७९ ॥ ९८० ॥

॥ ९८१ ॥ ९८२ ॥ ९८३ ॥ ९८४ ॥ ९८५ ॥ ९८६ ॥ ९८७ ॥ ९८८ ॥ ९८९ ॥ ९९० ॥ ९९१ ॥ ९९२ ॥ ९९३ ॥ ९९४ ॥ ९९५ ॥ ९९६ ॥ ९९७ ॥ ९९८ ॥ ९९९ ॥ १००० ॥